



2026:AHC:26673-DB

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

जनहित याचिका (पीआईएल) सं. - 135 सन् 2026

विशाल कुमार गुप्ता

.....याचिकाकर्ता(गण)

बनाम

उ.प्र. राज्य और 4 अन्य

.....प्रतिवादी(गण)

याचिकाकर्ता के अधिवक्ता(गण) : अनुराग राय

प्रतिवादी के अधिवक्ता(गण) : जगदीश पाठक(एस.सी.), आशुतोष कुमार पांडे, अश्वनी कुमार मिश्रा, नागेन्द्र नाथ मिश्रा

मुख्य न्यायाधीश का न्यायालय

माननीय मुख्य न्यायाधीश अरूण भंडाली

माननीय न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेन्द्र

1. यह याचिका, कथित तौर पर, जनहित में, याचिकाकर्ता द्वारा सेवा राही टाउन, तहसील-तमकुहीराज, जिला कुशीनगर में स्थित गाटा संख्या 680 ए में सार्वजनिक उपयोगिता भूमि (तालाब) पर उठाए गए कथित अवैध अतिक्रमण और अनधिकृत निर्माणों को तोड़ने के लिए दायर की गई है।
2. प्रस्तुत किया गया है कि गाटा संख्या 680ए की भूमि राजस्व रिकॉर्ड में पोखरा के रूप में दर्ज है, हालांकि, चूंकि उस पर निर्माण कई वर्षों से मौजूद है और याचिकाकर्ता द्वारा की गई शिकायत के बावजूद, प्रतिवादियों द्वारा इसे हटाया नहीं जा रहा है।
3. हमने याचिका के साथ-साथ प्रतिवादी संख्या द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज का भी अवलोकन किया है।
4. याचिका के अवलोकन से संकेत मिलता है कि कथित आपत्तिजनक निर्माण की एक तस्वीर अनुलग्नक संख्या 2 के रूप में प्रस्तुत की गई है। चित्र तीन अलग-अलग निर्माणों को इंगित करता है। जब याचिकाकर्ता के अधिवक्ता के सामने यह पूछा गया कि याचिकाकर्ता किस निर्माण को ध्वस्त करना चाहता है, तो अधिवक्ता ने इसका संकेत देने में असमर्थता व्यक्त की।
5. इसके अलावा, याचिकाकर्ता ने केवल एक प्रतिवादी को शामिल किया है और, जाहिरा तौर पर, तस्वीर तीन अलग-अलग इमारतों को इंगित करती है, हालांकि, किसी अन्य को पार्टी प्रतिवादी के रूप में शामिल नहीं किया गया है।
6. प्रतिवादी संख्या 4 के अधिवक्ता द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज में, याचिकाकर्ता, उसके पिता और मां के खिलाफ गंभीर आरोप लगाए गए हैं और विभिन्न मुकदमों के संबंध में संकेत दिए गए हैं। पार्टियों के बीच अनुच्छेद 227 के तहत संख्या 3143 सन् 2025 के तहत मामलों में पारित दिनांक 10.04.2025 के आदेश की एक प्रति भी प्रस्तुत की गई है।
7. जनहित याचिका के नाम पर याचिकाएं दायर करना, जहां पक्ष एक-दूसरे के खिलाफ मुकदमेबाजी कर रहे हैं, अनिवार्य रूप से जनहित याचिका के मंच का दुरुपयोग है। इस तथ्य के अलावा, देखने से ही निर्माण बहुत पुराना प्रतीत होता है, कि याचिकाकर्ता ने अब उक्त निर्माण के बारे में शिकायत करना शुरू करने के लिए किस बात को प्रेरित किया, इसका बिल्कुल भी संकेत नहीं दिया गया है, जो केवल प्रतिवादी संख्या 5 के साथ विवाद के कारण याचिका दायर करने में दुर्भावना को भी दर्शाता है।
8. याचिका में कोई सार नहीं है, इसलिए इसे खारिज किया जाता है।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



(न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेन्द्र) (मुख्य न्यायाधीश अरूण भंसाली)

फरवरी 6, 2026

Translated version. Not for Legal Use.

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"